

## क्षारीय वातावरण में धान की सीधी बुआई से आय एवं प्राकृतिक संसाधनों की बचत पर प्रभाव

रणवीर सिंह, आर.एस. त्रिपाठी, एस.के. चौधरी, डी.के. शर्मा, पी.के. जोशी  
एस.के. शर्मा, प्रदीप डे, डी.पी. शर्मा एवं गुरुवचनसिंह

प्राप्त: जुलाई, 2012

केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल (हरियाणा)

स्वीकृत: जनवरी, 2013

### सारांश

धान की सीधी बुआई तकनीक में पारंपरिक ढंग से रोपाई विधि की तुलना में औसतन 29% सिंचाई के पानी की बचत होती है। बिना जुताई (शून्य जुताई) पर धान की सीधी बुआई हेतु खेत तैयार करने में 86% डीजल की बचत की जा सकती है जबकि कम जुताई (50% जुताई) पर पारंपरिक विधि की तुलना में यह बचत 42% होती है। शून्य जुताई तकनीक पर धान की सीधी बुआई करने से पारंपरिक ढंग से रोपाई विधि की तुलना में 29% मानव श्रम कम लगता है जबकि कम जुताई तकनीक में 24% मानव श्रम की बचत की जा सकती है। सीधी बुआई विधि और पारंपरिक ढंग से रोपाई विधि में धान की उपज लगभग समान मिलती है। अतएव क्षारीय वातावरण में पारंपरिक ढंग से रोपाई विधि की तुलना में धान की सीधी बुआई तकनीक में सिंचाई के पानी, डीजल और मानव श्रम के रूप में उल्लेखनीय बचत होती है जिसके परिणामस्वरूप धान की सीधी बुआई में उत्पादन लागत में काफी कमी और शुद्ध आय में महत्वपूर्ण वृद्धि होती है।

*Bhartiya Krishi Anushandhan Patrika, 28(1) 6-13, 2013*

## EFFECT OF DIRECT SEEDED RICE ON INCOME AND SAVING OF NATURAL RESOURCES IN ALKALINE ENVIRONMENT

Ranbir Singh, R.S. Tripathi, S.K. Chaudhari, D.K. Sharma, P.K. Joshi,  
S.K. Sharma, P. Dey, D. P. Sharma and Gurbachan Singh\*

Central Soil Salinity Research Institute-Karnal (Haryana), India-132001

### ABSTRACT

The direct seeded rice method saved irrigation water, on an overall average, by 29% as compared to the conventional transplanting method of rice production. The saving of diesel in field preparation for direct seeded rice in zero tillage method was 86%, whereas it was 42% in reduced tillage (50 percent tillage) technique. The direct seeded rice technique saved human labour by 29% in zero tillage and 24% in reduced tillage as compared to those of the conventional method of rice transplanting. The yield of rice was almost the same in both the methods i.e., direct seeded and the conventional transplanting method of rice production. As a result of remarkable savings in irrigation water, diesel and human labour in direct seeded rice as compared to the conventional transplanting method, the cost of production reduced remarkably and net income increased significantly in direct seeded rice grown in alkaline environment.

\* अध्यक्ष कृषि वैज्ञानिक चयन बोर्ड, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, कृषि अनुसंधान भवन, नई दिल्ली - 100012

\*Chairman, Agricultural Scientist Recruitment Board, Indian Council of Agricultural Research, Krishi Anusadhan Bhawan, Pusa, New Delhi-100012.